मुनाल का पड़ोस

जग्गू नौड़ियाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुनाल का पड़ोस

जग्गू नौड़ियाल

समलौंण प्रकाशन,
ट्रांजिट होस्टल, लदाड़ी,
उत्तरकाशी — २४९ १९३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

MUNAL KA PAḌOS

by

JAGGU NAUḌIYAL

स्वामी शिवानन्द जन्मशताब्दी समारोह परियोजना के अन्तर्गत
दिव्य जीवन सङ्घ के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित ।

(१,००० प्रतियाँ)

संस्करण : प्रथम
१९८६ ई०

कॉपीराइट : जग्गू नौड़ियाल

प्रकाशक : समलौण प्रकाशन,
ट्रांज़िट होस्टल, लदाड़ी,
उत्तरकाशी — २४९ १९३

सहयोग-राशि— २१ रु०

मुद्रक : विज्ञान प्रेस,
ऋषिकेश — २४९ २०१,
(देहरादून) उ०प्र०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राक्कथन

हरि ॐ !

बदरीनारायण तथा केदारेश्वर महादेव को श्रद्धामय प्रणाम ! पवित्र उत्तराखण्ड के इन देव-द्वय की कृपा कवि जग्गू नौड़ियाल तथा उनके कविता-संग्रह 'मुनाल का पड़ोस' के समस्त पाठकों पर हो ! गढ़वाली भाषा में रचित उनकी कविताओं के सङ्कलन 'समलौण'—जिसका पाठकों ने स्वागत किया था—के बाद प्रस्तुत संग्रह का प्रकाशन किया जा रहा है। बाल्यकाल से ही माता की ममता से वञ्चित कवि के हृदय को आशा-निराशा, दुःख तथा एकाकीपन की भावनाओं ने आन्दोलित किया है। इस कविता-संग्रह की अनेक कविताओं में इसकी झलक पायी जाती है तथा इस कारण उनमें आत्म-कथात्मक पुट आ गया है। स्थूल दृष्टि से न दिखायी पड़ने वाला प्रच्छन्न प्राकृतिक सौन्दर्य, जो कवि की तीक्ष्ण दृष्टि से छिपा नहीं रह पाया है तथा कवि द्वारा प्राप्त अपने आसपास की प्रकृति का संवेदनशील बोध भी इस संग्रह की कविताओं में प्रतिबिम्बित है।

इस पुस्तक के बारे में सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा स्वयं लिखी गयी प्रशंसात्मक पंक्तियों का अवलोकन करने के बाद अब मेरे लिए इन कविताओं के गुणात्मक पक्ष के बारे में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं रह गयी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुश्री महादेवी वर्मा की पंक्तियाँ स्वयं ही इस पुस्तक की विषय-सामग्री तथा उसके रचयिता का परिचय देती हैं।

एक उभरते हुए कवि के रूप में सङ्घर्षरत जग्गू नौड़ियाल को मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। मैं उनकी सफलता की कामना करता हूँ। मेरी इच्छा है कि पाठक-जगत् में उनके इस कविता-संग्रह का स्वागत हो तथा अधिकाधिक संख्या में पाठक इसे पढ़ें। कवि तथा इन पंक्तियों को पढ़ने वाले पाठकों पर ईश्वर की कृपा रहे! उत्तराखण्ड, गङ्गामाता तथा पवित्र हिमालय को प्रणाम!

स्वामी चिदानन्द ॐ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

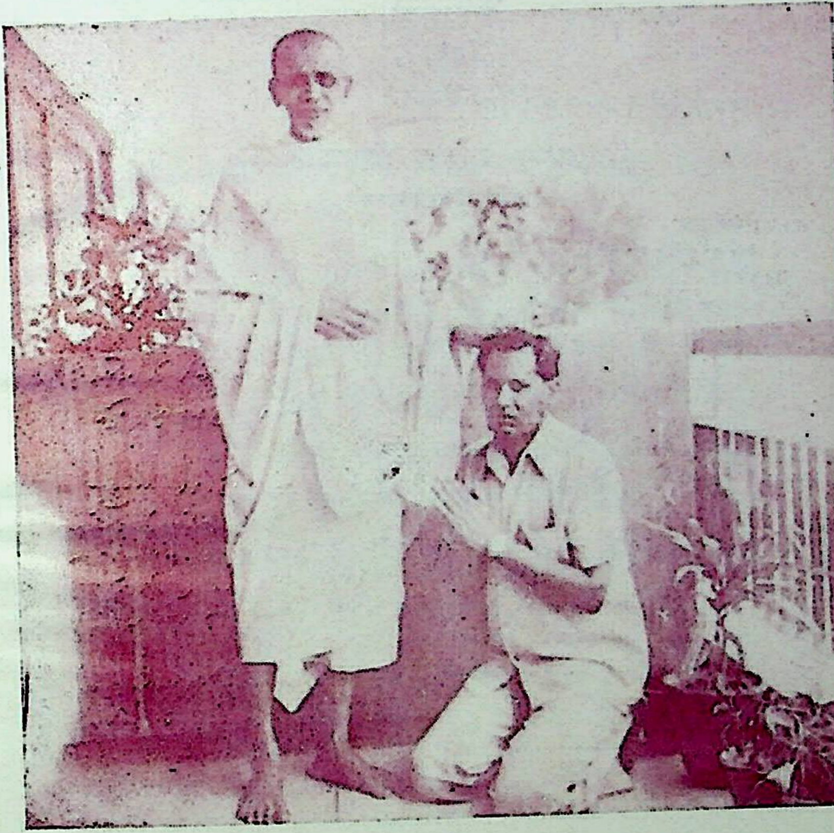

कवि को आशीर्वाद देते हुए पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्ययाऽमृतमश्नुते

प्रयाग महिला विद्यापीठ

प्रयाग महिला विद्यापीठ

(महिला विश्वविद्यालय)

म० महादेवी वर्मा
एम० ए० साहित्य वाचस्पति
उपकुलपति

१६ सी अशोक नगर
इलाहाबाद

तिथि [illegible] १९८४

श्री [illegible] उपाध्याय जी [illegible] कवि हैं उनकी रचनाओं की पुस्तक संकलन प्रकाशित हो चुकी है।

यह पुस्तक [illegible] गीत [illegible] काव्य-विधि के रूप में मेरे सामने है। कवि के [illegible] हृदय के [illegible] विविध भावचित्र हैं जो [illegible] के मर्म को स्पर्श करते हैं। [illegible] मर्म को छूनेवाली दृष्टि [illegible] की गम्भीर वेदना भी है।

विश्वास है उनकी रचनाओं [illegible] के समान [illegible] भी पाठक की आत्मीय संवेदना प्राप्त करेंगी। कवि के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभ कामनाएँ प्रेषित हैं।

महादेवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयाग महिला विद्यापीठ

(महिला विश्वविद्यालय)

डा० महादेवी वर्मा
एम०ए०, साहित्य वाचस्पति
उप-कुलपति

१७-सी, अशोक नगर
इलाहाबाद

तिथि २०-१२-१९८४

श्री जग्गू नौड़ियाल उत्तरकाशी के कवि हैं। उनकी गढ़वाली पुस्तक समलौण पुरस्कृत हो चुकी है।

यह प्रस्तुत संग्रह 'मुनाल का पड़ोस' पाण्डुलिपि के रूप में मेरे समक्ष है। कवि के व्यथित हृदय के इसमें विविध भाव-चित्र हैं जो पाठक के मर्म को स्पर्श करते हैं। जग्गू जी में मर्म को छूने वाली दृष्टि के साथ हृदय की गम्भीर वेदना भी है।

विश्वास है उनके गढ़वाली समलौण के समान प्रस्तुत हिन्दी-संग्रह को भी पाठक की आत्मीय समवेदना प्राप्त होगी।

कवि के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभ कामनायें प्रेषित हैं।

—महादेवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वकथन

समाज की बाह्य परिस्थितियाँ और आन्तरिक उथल-पुथल व्यक्ति के चिन्तनशील मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोड़ती हैं। जीवन की यथार्थ परिस्थितियाँ अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम प्रस्तुत करती हैं। प्रस्तुत काव्य-संग्रह समाज का, व्यक्ति का और भावाभिव्यक्ति का समुचित समन्वय कहा जा सकता है। कवि व्यक्तिवादी न रहकर भी समष्टि के धरातल को अनुभव करके चला है। वस्तुस्थिति को प्रकट करने के लिए किसी विशिष्ट काव्य-परम्परा में ही बँधकर रह जाना आवश्यक नहीं है। आसन्दी पर स्थिति को प्रकट करने के लिए सरलतम साधन उपयुक्त हैं, अतः नवीन धारा को भी आत्मसात् करके प्रगतिशील युवा मनीषियों को भी अपने काव्य-पथ का साथी स्वीकार करके उनके प्रति अपनी श्रद्धा को एवं ग्रहण-क्षमता को प्रकट किया गया है।

दौड़ का अन्त, भगदड़ की सीमा, उत्सव का समापन—ये सब प्रक्रियाएँ सन्ध्या के प्रहर को खटखटा जैसी रही हों! दस्तक देने पर गोधूलि में ही रात्रि-रूपी कल्पना बहरी क्यों हो गयी ? कुछ जाना हुआ प्रतीत नहीं होता। नियति अपनी परिसीमा को देख रही है! न जाने क्यों ? क्या यह सब ब्रह्माण्ड में लीन हो जायेगा ? यह भी सम्भव हो सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका अन्तिम दौर गज़ल के चढ़ाव से उतरकर, अपनी पहली अवस्था में आकर मूललय के निकट पहुँच जाता है। हमने इसको निर्माण के अन्तिम चरण पर ओला-वृष्टि का भयानक दृश्य माना ! किन्तु इसकी सन्ध्या क्लान्त-श्रान्त क्यों महसूस होती है ? फिर संसृति के उस रूप को आँखों मे देखने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है ! किन्तु हाँ, दुनिया को गोल मानने पर, अन्त का अन्तिम छोर ही एक नयी शुरूआत से गुज़रने का आदी है जो भूले हुए ज्ञान-विज्ञान के अतीत को काली रोशनाई से ढक देता है। दिन का अन्त एक नवीन दिशा का आभास दिलाता है; किन्तु कब तक ? निश्चय-अनिश्चय संशय की बीहड़ बनस्थली में मौन हैं। शायद परिस्थितियाँ ऐसा निर्णय लेने को तैयार हैं।

सूक्ष्म-से-सूक्ष्म वातावरण की लहरों को अन्तर्मन से, विवेक-बुद्धि से महसूस करके उसे अपनी लेखनी का विषय बनाया गया है। भटकाव और अलगाव के स्वरूप को जीवन के विभिन्न स्तरों पर देखने के पश्चात् नयी ज्योति जलाने का प्रयास किया गया है। समस्याओं को ज्यों-का-त्यों नहीं रखा ! अपितु गहन असन्तुलन और निशा की प्रगाढ़ता में आशा की किरण का कविताओं में यत्र-तत्र प्रभावशाली सञ्चार किया है। गढ़-वाली के कुछ आञ्चलिक भाषा (बोली) के शब्दों को भी मैंने इन कविताओं में रखा है, क्योंकि आञ्चलिक प्रचलित भाषा के ये ओज और माधुर्यपूण विशिष्ट अर्थयुक्त 'शब्द' भाषा की समृद्धि के द्योतक हैं। इससे अन्य भाषाओं के साथ सामञ्जस्य होना स्वाभाविक है। 'मुनाल का पड़ोस' नामक कविता में ठेठ गढ़वाली के कुछ शब्द रखे गये हैं। इससे हिन्दी-भाषा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की समृद्धि संभव है। ये प्रयास सफल रहे हैं या विफल, इसका निर्णय सहृदय समाज ही कर सकता है।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह सहृदय एवं काव्य में अभिरुचि रखने वाले पाठकों तक इतनी जल्दी न पहुँच पाता, यदि हिमालय के महान् आध्यात्मिक सन्त पूज्यपाद स्वामी चिदानन्द जी महाराज का सान्निध्य एवं आशीर्वाद इस संघर्षशील कवि को न मिलता। स्वामी चिदानन्द जी के अविस्मरणीय सहयोग से ही यह काव्य-संग्रह इतनी जल्दी प्रकाशित हो पाया है। पूज्य स्वामी जी न केवल हिमालय के महान् सन्त हैं अपितु वर्तमान में विश्व में आध्यात्मिक ज्योति का अलख जगाने वाले महान् मनीषी भी हैं। स्वामी जी ने इस काव्य-संग्रह को प्रकाशित कराने का उत्तरदायित्व लेकर मुझे काव्य-ज्योति जगाये रखने की प्रेरणा प्रदान की है। यह कवि परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है।

कवि को समाज में प्रेरणा तभी मिलती है जब कि कुछ निकटस्थ परिवेश के लोग उसे काव्य-लेखन के लिए प्रोत्साहन देते रहें। उत्तरकाशी के प्रबुद्ध जिला अधिकारी श्री के० सी० मलहोत्रा इस कवि को सदा हर प्रकार का सहयोग तथा प्रोत्साहन देते रहे हैं। यह कवि श्री मलहोत्रा के द्वारा समय-समय पर प्रदत्त सहयोग को कभी भूल नहीं सकता। वह उनके प्रति विशेष आभार प्रकट करता है।

यह कवि अपने शोध-निर्देशक डा० हरिमोहन, डी०लिट्० का ऋणी है; क्योंकि डा० हरिमोहन जी ने समय-समय पर अपने सुझाव उसे दिये हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रा कत्था फैक्टरी, नजीबाबाद के मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुनाल पक्षी के चित्र प्राप्त करने में मुझे सहयोग दिया। अभिन्न मित्र डा० रामानन्द गैरोला के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ। डा० गैरोला से मुझे अनुज सदृश्य प्यार और प्रेरणा मिलती रही है।

—जग्गू नौड़ियाल
२६ अक्तूबर १९८४
ट्रांज़िट होस्टल, लदाड़ी,
उत्तरकाशी, उत्तर प्रदेश।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि-परिचय

जन्म—२४ अक्तूबर १६४०, ८ गते कार्तिक संवत् १६६६ में भीमली, पैंडुलस्यूँ, पौड़ी-गढ़वाल, उत्तर प्रदेश में हुआ।

नाम—कवि-रूप में—'जग्गू नौड़ियाल', पूरा नाम जगदीश प्रसाद नौड़ियाल।

पिता—स्वर्गीय पण्डित श्री चैतराम नौड़ियाल।

माता—स्वर्गीया चन्दनीदेवी नौड़ियाल।

शैक्षिक योग्यताएँ—स्वावलम्बन से ही शनैः-शनैः एम०ए० हिन्दी में, डी०फिल० (पञ्जीकृत) ग०वि०वि०—'रवाँई-क्षेत्र के लोक-साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन'—विषय पर डी०फिल० उपाधि के लिए गढ़वाल विश्वविद्यालय से शोधरत।

व्यवसाय—अध्यापन (मिडिल स्कूल में)।

सम्प्रति—उत्तरकाशी में अध्यापक।

प्रकाशित रचनाएँ—

१—'गीतु की गाड' कविता-संग्रह १९६३ में दिल्ली से प्रकाशित।

२—'समलौण' काव्य-संग्रह उत्तर प्रदेश सरकार की ५,०००/- प्रकाशन-सहायता से १९८० में दिल्ली से प्रकाशित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३—'मुनाल का पड़ोस' आपके समक्ष।

४—शोध-ग्रन्थ शीघ्र प्रकाश्य।

विशेष—माँ चन्दनी मात्र दो वर्ष तक जिस नाम को पुकारती रही होंगी, वही 'जग्गू' नाम 'समलौण' अर्थात् (स्मृति-चिह्न) के रूप में कवि माँ की स्मृति ताजी रखना चाहता है; इसलिए कवि बनावटीपन से दूर हट कर वास्तविकता की ओर बढ़ा है। नौड़ियाल हिमालय के क्षेत्र, प्रकृति की सुरम्य वनस्थली में जन्म के सम्बोधन से अपने को गौरवान्वित पा रहा है। डा० पार्थ सारथि डबराल के अनुसार—"दो वर्ष की आयु में ही माता के स्नेह से वञ्चित हो गये। वे स्वयं ऐसे "समलौण" (अमानत) हैं जिससे परलोक की असमय तैयारी की जल्दी में उनकी स्नेहमयी माता उनके पिता को सौंप गयी।

"मातृहीन बालक को अभावों ने पाला, विषम परि-स्थितियों ने पोसा तथा समस्याओं ने स्तन्य पान कराया। उनके पथ पर शूल थे जिन्हें उन्होंने फूल समझ कर अपनाया। वे ठोकरें थीं जिन्हें उन्होंने उपदेश समझ कर ग्रहण किया। कुटिल प्रश्नचिह्नों को उन्होंने सरल सम्बोधन समझा। अन्य लोग विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं, ये विश्व के विद्यालय में पढ़े। ऐसा है इस कवि का परिचय! किन्तु जीवन-मन्थन के बाद वह जो कुछ दे रहा है, वह नवनीत ही है। इस विचार-नवनीत को वे लगाने की वस्तु नहीं, आस्वाद्य और दान करने की वस्तु समझते हैं। निराशा में भी उन्होंने आशा देखी, अतः हम भी उनमें आशा देख रहे हैं। इस आशा का झुकाव विश्वास की ओर है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रम

प्राक्कथन	.....	..	तीन
डा० महादेवी वर्मा का आशीर्वाद		.....	पाँच
स्वकथन	.....	.....	छः
कवि-परिचय	...	.....	दश
मुनाल का पड़ोस	....	...	१
सिसकती साँझ	.....	.....	६
प्रभा-नर्तन	.....	.....	९
मेरे सङ्घर्षों का एक अंश	.....	....	१२
वक्त की पहिचान	....	....	१६
प्राण-वेदना का सन्देश	....	....	२०
विधवा	....	.....	२४
वीरों का हुङ्कार	.....	.....	२६
मज़दूर	.....	.....	२९
व्यथित शिक्षक	.....	.....	३५
किंकर्त्तव्यविमूढ़	.....	.....	४३
वृक्ष	.....	.....	४५
ज्ञानसू-भूस्खलन	.....	.....	४८
बेरोज़गार युवा	.....	.....	५७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धीरा का धर्म	६१
शहीद 'सुमन'	६५
भूल	६६
समय की छाप	६७
उखड़ती साँस	७१
थाना	७३
उद्विग्नता	७४
दृष्टिभेद	७५
आदत का साथ	७६
नकली डिगरी	७८
क्षणभंगुरता	८१
जाग विश्व के युवा	८४
एक दिव्य शक्ति : पूज्य स्वामी चिदानन्द जी	८७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व में
आध्यात्मिक ज्योति का
अलख जगाने वाले
हिमालय के महान् सन्त
पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज
के श्री-चरणों में
सादर समर्पित

—कवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुनाल का पड़ोस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

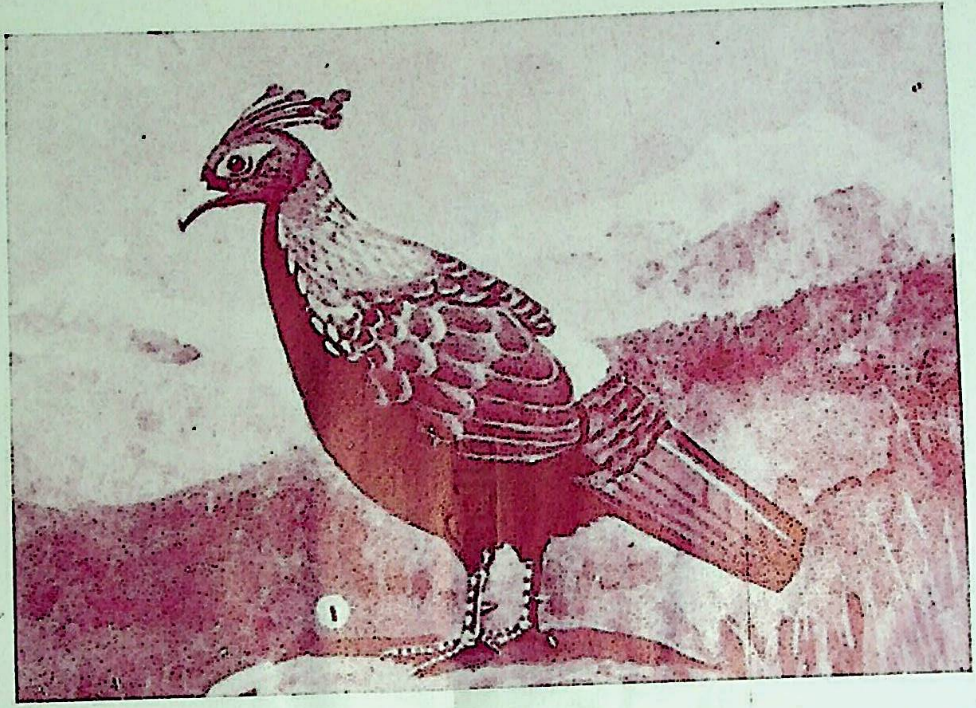

मुनाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुनाल् का पड़ोस*

शैल के प्रदेश में
गीतिका के भेष में
विजान - सा प्रभात मैं
भाव में विभोर हूँ।
विजन के इस देश में
हिलाँस[1] के सुदेश में
मुनाल्[2] के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ॥

मेदिनी पुकारती यह
वेदना व्यथा भरी
वेदने मुझे वता तू
आज क्यों है बढ़ रही।

---

*इस कविता में अङ्काङ्कित गढ़वाली सशक्त शब्दों का हिन्दी में प्रयोग किया गया है। ये शब्द हिन्दी-साहित्य की शब्द एवं भाव-शक्ति में वृद्धि करेंगे।

[1]कोयल की तरह सुरीले कण्ठ तथा विभिन्न रंगों वाला हिमालय का एक प्यारा पक्षी।

[2]हिमालय क्षेत्र का मोर की तरह का एक सुन्दर, प्यारा, सुनहरे रंग वाला विशेष पक्षी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ढला - ढला चला कि
साँझ गीत गा रही
बीत इधर दिन चला कि
रात उधर आ रही ।
साँझ की ढलान पर
आज की पुकार हूँ ।।
मुनाल के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ।।

हो रहे हैं जुल्म जो
समाज में अनेक ये
न कर रहा है कार्य को
कोई स्वयं विवेक से
वैर - भाव बढ़ रहा ये
राग - द्वेष - भेद से
अनेक बन रहे यहाँ
ये लोग एक - एक से ।
न्याय के विवेक पर चला हुआ
मैं एक राहगीर हूँ ।।
मुनाल के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ।।

अहम् भरे किशोर आज
खोखले से लग रहे
संकुचित विचार क्यों ये
बन गये हैं मनचले ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रीति छोड़ नीति की
अजीब बात कर रहे
फिल्म के अश्लील चित्र
स्वप्न में भी दिख रहे।
उभार लूँ मैं चित्र को कि
एक चित्रकार हूँ ।।
मुनाल के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ।।

जन - जन से डर रहा कि
प्रीति दूर जा रही
वन्धु - वन्धु भिड़ रहे कि
लूट - पाट हो रही।
विभेद नीति आज ये
विवाद में फँसा रही
क्षेत्रवाद - धर्म - जात
विषमता बढ़ा रही।
मिटा सकूँ विकार को मैं
एक परिष्कार हूँ ।।
मुनाल के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ।।

समाजवाद आ रहा कि
बन्धु मेरे कह रहे
वस्तुओं के भाव हैं कि
आसमाँ को छू रहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द - दर्द पल रहा कि
पीड़ घुटन बन रही
दर्द की यह आह एक
मौन क्यों खड़ी - खड़ी ।
इस बने विस्फोट का मैं
दहकता चिनगार हूँ ॥
मुनाल़ के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ॥

यथार्थ का परित्याग कर
यह लोग कहाँ जा रहे
इन विभाति थातियों को
आज क्यों मिटा रहे ।
बनावटी यह नृत्य तो
विजात गात लग रहा
रूप है बनावटी जो
साँझ बन के ढल रहा ।
इसी ढलान पर मिलान की
बनी कतार हूँ ॥
मुनाल़ के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ॥
शृङ्ग के पड़ाव में
बुग्याल़[1] है हरी - भरी
रह रहा बयार में मैं
सघन देवदार की ।

---

[1]हिम-रेखा और वृक्ष-रेखा के बीच के भाग पर लगी हुई अत्यधिक शक्तिवर्द्धक छोटी-छोटी हरी घास जो बहुत ही मोहक लगती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीड़-क्वैल हैं बुराँस
मीत को निभा रहे
डाल-पात स्वर मिला के
मेरे साथ गा रहे ।
इस वसन्ती फाग में मैं
चैत का मौल्यार[1] हूँ ।।
मुनाल के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ।।

जाह्नवी तू धन्य है हे
पुण्य मेरी स्थली
प्रकृति-प्रदत्त वाटिका में
खिल रही कली-कली ।
सुरम्य वन्य का उपान्त
निश्छलों की स्थली
हिवाँर के प्रदेश में मैं
भर रहा पुष्पांजली ।
इन हिवाँली[2] घाटियों में
गूँजता "रैबार"[3] हूँ ।।
मुनाल के पड़ोस का मैं
एक गीतकार हूँ ।।

चन्द्रवार, १९ अप्रैल १९८२
उजेली पथ पर, उत्तरकाशी में

---

[1]वसन्त में पेड़-पौधों में नयी कोंपलें और नये पत्तों का आना ।

[2]सन्देश ।

[3]हिमवाली ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिसकती साँझ

लगा है विश्व में मेला
यहाँ कुछ दिन बिता जाना।
भला यह चार दिन का है
अरे! मानव नहीं जाना!॥

कई आते कई जाते
युगों से चल रहा मेला
यहाँ दिन के प्रहर फिसले
सिसकती साँझ की वेला।
तमस् पी-पी जला दीपक
जला उन्मत्त परवाना॥
अरे! मानव नहीं जाना!
भला यह चार दिन का है
यहाँ कुछ दिन बिता जाना॥

परस्पर देश लड़ते हैं
अनर्थों पर झगड़ते हैं
गगन से बम बरसते हैं
प्रलय के घन कड़कते हैं।
अरे! इनसान ने चाहा
परम सत्ता से भिड़ जाना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरे ! मानव नहीं जाना !
भला यह चार दिन का है
यहाँ कुछ दिन बिता जाना ॥

कि, चींटी है परों वाली
गगन की ओर है जाती
नियति के क्रूर हाथों से
धरा में ही समा जाती ।
बने हैं पंथ के राही
सभी को है चला जाना ॥
अरे ! मानव नहीं जाना !
भला यह चार दिन का है
यहाँ कुछ दिन बिता जाना ॥

फँसे हैं राग-द्वेषों में
कई माया - प्रपंचों में
यहाँ पीड़न-उत्पीड़न
हैं आपस की टक्कर में ।
यहाँ तो चन्द दिन का है
मुसाफिर - सा ठहर जाना ॥
अरे ! मानव नहीं जाना !
भला यह चार दिन का है
यहाँ कुछ दिन बिता जाना ॥

गिरा है भाव मानव का
मानवता हो गई सस्ती
मची है लूट धरती में
सिसकती है यहाँ जगती ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है लक्ष्य जीवन का
अँधेरों में भटक जाना ।।
अरे ! मानव नहीं जाना !
भला यह चार दिन का है
यहाँ कुछ दिन विता जाना ।।

यहाँ का ढंग दुरंगा है
मनीषी भी भटकते हैं
हजारों पाप के कीड़े
धरा में ही पनपते हैं ।
लुटा कर मानवता यारो
कुटिलता पर पहुँच जाना ।।
अरे ! मानव नहीं जाना !
भला यह चार दिन का है
यहाँ कुछ दिन बिता जाना ।।

निरख तू आज सन्ध्या की
अभी प्रारम्भ झाँकी है
डुला दी जो अभी किश्ती
समूची रात बाकी है ।
नदी की धार में नौका
सँभल कर पार पहुँचाना ।।
अरे ! मानव नहीं जाना !
भला यह चार दिन का है
यहाँ कुछ दिन बिता जाना !
अरे ! मानव नहीं जाना ।।

१० अक्टूबर १९६२
भीमली, पौड़ी-गढ़वाल — अपने गांव में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभा-नर्तन

चली बहारें बन कर फुहारें
खुले गगन के नीचे भू पर
झाँक रही थीं मेरा जीवन
पाया उनमें था अपनापन ॥

मेरी स्पर्धा अभिसिंचित कर
धूप-छाँव में मुझको पा कर
वह भिगोती कभी रही हैं
मेरे जीवन की आभा बन ।
ऐसी किरणें जिनमें थिरकन
पल-पल करती प्रभा - नर्तन ।
फिर तो मैंने किया समर्पण
बड़ी लगन से अपना तन-मन ॥

चली बहारें बन कर फुहारें
खुले गगन के नीचे भू पर
झाँक रही थीं मेरा जीवन
पाया उनमें था अपनापन ॥

किन्तु प्रदूषण की धारा से
टकराती क्यों चाकी बन कर
वंचना के देश में लुट गई
प्रेम-पथिक की भीलन आ कर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत बना कर देख रही थी
करती अब तक थी जो मन्थन
लूट रहे क्यों खुल्लम-खुल्ला
जिसमें मैंने पाया दर्शन ।।

चली बहारें बन कर फुहारें
खुले गगन के नीचे भू पर
झाँक रही थीं मेरा जीवन
पाया उनमें था अपनापन ।।

वीरानी के देश का जंगल
तमतमाता बीहड़ स्थल
राग-द्वेष का इसमें छल-बल
एक मरुस्थल जैसा दलदल ।
जीवन का बस मापदण्ड ये
सिसक रहा है बोझ समझ कर ।
दब कर उठाना ही है जीवन
जिसमें होते मानव दर्शन ।।

चली बहारें बन कर फुहारें
खुले गगन के नीचे भू पर
झाँक रही थीं मेरा जीवन
पाया उनमें था अपनापन ।।

मेरी प्रभा हड़बड़िया हो
अछूती निकल कर लुप्त होती जो
कह गई मुझसे जाने क्या-क्या
सुन पाया मैं कुछ भी न तो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आभा तुमको करना होगा
अपने मन में सही मनन ।
आई थी बस ! चली गई क्यों
मेरे भविष्य की नई दुलहन ॥

चली बहारें बन कर फुहारें
खुले गगन के नीचे भू पर
झाँक रही थीं मेरा जीवन
पाया उनमें था अपनापन ॥

चन्द्रवार, २६ मार्च १९८४
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे संघर्षों का एक अंश

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई ।
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ।।

झेले संघर्ष मैंने डट कर
पैर बढ़ाया और सँभल कर
तूफानों से भय नहीं खाया
फिर तो साहस स्वयं ही आया ।
देखा आगे ! रपटन भारी
एक बात थी ! विस्मयकारी !
बाहर उजला नर हो नारी
अन्दर झाँका तो थी काई ।।

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ।।

बाधाओं से मैंने पूछा
करती क्यों हो मेरा पीछा ?
संकट - विपदा और पीड़ाएँ
ईर्ष्या ने जब घेरी राहें ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन सब से फिर अनुभव पाए
जो कविताओं में दर्शाए ।
मन की पीड़ा मन्थन करके
अन्त:पुर से बाहर आई ।।

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ।।

सगे-सम्बन्धी जितने द्वन्दी
उतनी मेरी हुई बुलंदी
अपना पथ मैं नाप रहा हूँ
चलते-चलते भाँप रहा हूँ ।
कंटक राहें दायें-बायें
रह कर भी कुछ बनी आशाएँ ।
बड़ी सीख है जग से पाई
इसने मुझको राह दिखाई ।।

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ।।

कभी किसी ने चर्चाएं की
जग्गू कितना नाम है छोटा
इस युग में बस नाम बड़ा हो
चन्द्र कान्त मणि शेखर होता ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूलूँ कैसे उस बचपन को
माँ ने जग्गू रखा जो था ।
धरोहर माँ जो सौंप गई थी
छिपा न सकता हूँ सच्चाई ॥

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ॥

डाकघरों से चिट्ठी गायब
भी मेरी ही होती हैं
काव्य-पाठ का फाड़ निमन्त्रण
क्या ये घटनाएँ छोटी हैं
जाने कब से कितने सन्तरी
फाड़ रहे हैं चिट्ठी-पत्री ।
जो भी हो तुम मेरे भाई
फिर भी देता तुम्हें दुहाई ॥

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ॥

जीवन में बस पीड़ा पा कर
झेली हैं सब गर्मी-सर्दी
किन्तु किसी से नहीं मिल पाई
मुझको कोई भी हमदर्दी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्यार की खातिर मन ललचाया
आखिर दिल था आँसू लाया
इन अधरों ने राहत पाई
पा कर आँसू प्यास बुझाई ।।

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ।।

ऐसी घटना बहुत नहीं हैं
जिसने आँसू स्वयं पिए हैं
धरती कहती मेरे मोती
जाने किसने पान किए हैं ।
उनमें करुणा छलक रही थी
माँ की ममता तड़प रही थी ।
फिर तो कवि ने कलम चलाई
स्वावलम्बन को तपी-तपाई ।।

अनजान चला मैं इकला राही
जब से मैंने कलम उठाई
किसी ने मेरी हँसी उड़ाई
और किसी ने मुँह की खाई ।

बृहस्पतिवार, २७ अक्टूबर १९८२
ज्ञानसू. उत्तरकाशी में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वक्त की पहिचान

वक्त की पहिचान किसको
वह बना दे या मिटा दे ।
वक्त का अन्दाज क्या है
क्या करिश्मा कर दिखा दे ।।

वक्त था श्रीराम का जब
राज्य मिलना था उन्हें ।
वक्त की साजिश को देखो
वन घुमा डाला उन्हें ।
वक्त ने मंगल से उनका
क्या अमंगल कर दिया ।
वक्त ने अद्‌भुत शिला को
रूप नारी का दिया ।
वक्त केवट को पता है
श्रीराम के जो पग धुला दे ।।

वक्त की पहिचान किसको
वह बना दे या मिटा दे ।
वक्त का अन्दाज क्या है
क्या करिश्मा कर दिखा दे ।।

वक्त पर माँ कैकेयी की
सुमति मति क्या हो गई ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धि वीणावादिनी क्यों
बीज ऐसा बो गई ?
राम तारा आँख का था
क्यों उसी को वन दिया ।
रीति रघुकुल की सही
प्राण तक भी दे दिया ।
राज्य पाकर भी भरत को
लोभ से निर्लोभ कर दे ॥

वक्त की पहिचान किसको
वह बना दे या मिटा दे
वक्त का अन्दाज क्या है
क्या करिश्मा कर दिखा दे ॥

वक्त देखो जानकी का
जंगलों में धूप पानी ।
कल्पना क्या हो सकेगी
वह कभी थी राजरानी ।
घास की उन छानियों में
कष्ट को सहती रही जो ।
संग पति के थी सिया
फिर भी चोरी ही गई ओ ।
शान्त वन में प्रपंच माया
छल-कपट कर जो बता दे ॥

वक्त की पहिचान किसको
वह बना दे या मिटा दे
वक्त का अन्दाज क्या है
क्या करिश्मा कर दिखा दे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वक्त पर हरिश्चन्द्र ने था
राज्य अपना दान कर ।
रात-दिन पहरा दिया जब
था बिका श्मशान पर ।
पुत्र उसका चल बसा था
वह अड़ा था आन पर ।
ले रहा था कर स्वयं ही
सत्यता की बात पर ।
वक्त की वह थी परीक्षा
पुत्र को फिर जो बचा दे ।।

वक्त की पहिचान किसको
वह बना दे या मिटा दे ।
वक्त का अन्दाज क्या है
क्या करिश्मा कर दिखा दे ।।

वक्त आया पाण्डवों का
वन भटकते ही रहे ।
वक्त आया जय-विजय का
कृष्ण सारथि बन गए ।
वक्त पर अभिमन्यु को था
चक्रव्यूह तोड़ना पड़ा ।
वक्त पर अर्जुन बना था
एक अबला बृहन्नला ।
द्रौपदी के पति स्वतः ही
एक से जो पाँच कर दे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वक्त की पहिचान किसको
वह बना दे या मिटा दे ।
वक्त का अन्दाज क्या है
क्या करिश्मा कर दिखा दे ॥

वक्त जब था फिरंगी का
कर गए शासन यहाँ ।
वक्त पर ही देश अपना
था गुलामी में रहा ।
था निकम्मा वक्त वह क्या
दर्द को पीता रहा ।
वक्त बापू के इशारे पर
स्वयं ही चलता गया ।
वक्त वह है शान्ति से जो
विश्व को रहना सिखा दे ॥

वक्त की पहिचान किसको
वह बना दे या मिटा दे ।
वक्त का अन्दाज क्या है
क्या करिश्मा कर दिखा दे ॥

२० मई १९८१
हिमालय की उपत्यका, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राण-वेदना का सन्देश[1]

हे भ्रमर तू यह सन्देशा, मेरे घर पर पहुँचाना ।
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

पथ सीधा है गंगा - तट से
उड़कर जाना धारा - पथ से,
शिव - मन्दिर के कुछ ऊपर से
भवन बने हैं टिन की छत के ।
वृक्ष खड़े हैं घर के पीछे, उस स्थल पर रुक जाना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

मेरे घर के आगे आँगन
उसमें बैठे होंगे सब जन,
पहले करना गुन - गुन - गुन - गुन
फिर गाना तुम करुणा की धुन ।
छोड़ रहा हूँ साथ तुम्हारा, ऐसा प्रिय से कह देना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

---

[1]गंगोत्तरी मार्ग पर उत्तरकाशी से ५० किलोमीटर आगे डबरानी में भूस्खलन से १९८१ में जिन पाँच-सात व्यक्तियों की जानें गयीं, उनमें मेरे मित्र डा० खुगसाल भी अपनी असमय तैयारी की जल्दी में भ्रमर द्वारा प्राण-वेदना का सन्देश अपने घर पहुँचा रहे हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राह निरखते होंगे घर पर
दोनों वच्चे बाहर पथ पर,
तुम जाओगे कुछ थक - थक कर
धीरे से कहना कुछ रुक कर।
कोमल फूलों की कलियों को, सिंचित करते ही रहना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

वैठक के अन्दर जो कमरा
उसमें दीपक होगा जलता,
अशुभ अमंगल के लक्षण से
जलता, बुझता और सिसकता।
दायीं आँख फड़कती होगी, प्रिय को धीरज वँधवाना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

आज अचानक संकट आया
दबी शिला के नीचे काया,
प्रभु तूने क्या समय दिखाया
बच्चों को मैं देख न पाया।
इस तड़पन की दुःखद कहानी, घर पर ना तू बतलाना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

यह सुन करके प्रिया मेरी
दुर्गति ना कर दे वह तेरी,
कहना, मेरा दोष नहीं है
बनी प्रकृति है आज लुटेरी।
कितनी सधवाओं का इसमें, हुआ है विधवा बन जाना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरा - भरा यह बाग - बगीचा
बड़ी लगन से मैंने सींचा,
देना मालिन इसमें पानी
करना न तुम इसकी हानि ।
इस गुलशन पर न्यौछावर तुम, अपना सब-कुछ कर देना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

जनम - जनम के हैं हम साथी
आत्माएँ फिर मिलती जातीं,
देह नश्वर है ज्यों वृक्ष - पाती
देख शिशिर को झड़ती जातीं ।
और वसन्त के आने पर फिर, कलियों का होता खिल जाना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

है क्या विधि की काल विडम्बना
कभी मिलन और कभी छिड़ना,
कभी पथिक कोई कभी पाहुना
गति जीवन की चलते रहना ।
देह छोड़ कर प्राणों का तो, होता है फिर चल देना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

तेरा जोगी भ्रमर बन कर
तेरे आँगन इन डालों पर,
कभी निहारूँगा फूलों पर
मँडराऊँगा तेरे दर पर ।
मेरी जोगिन भाव - पिपासा, से तुम, स्वागत कर लेना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तिम सन्देशा यह कहना
धीरज तुमको है अब रखना,
होगा तुमको इकला चलना
स्वयं संभलना कोई न अपना।
छूटी नैया बीच भंवर में, इसकी माँझी तुम बनना ॥
यह प्राण - वेदना का सन्देशा, इसको लेकर खुद जाना ॥

मंगलवार, २८ दिसम्बर १९८२
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विधवा

कलिका उभर रही थी
अलि आह भर रहा था ।
मेरी कली खिलेगी
तृष्णा में जल रहा था ॥

दिन-रात था भटकता
यौवन में खो रहा था ।
मृदु राग गुन-गुना कर
मदमस्त हो रहा था ॥

कलिका जवान थी अब
अलि प्राण तज रहा था ।
चूमे बिना कली को
बगिया से चल बसा था ॥

अब फूल खिल गया है
राहें निहारता है ।
हिलता हिलोर लेता
भौंरे को ढूंढ़ता है ॥

पा ज्ञान इस जगत् का
चन्दा से चाँदनी का ।
मधुमास ढल रहा है
वह फूल कह रहा है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिलकर युवा सुमन ने
ढूंढ़े न प्यार पाया ।
कैसा सुमन सुकोमल
चिन्ता में जल रहा था ॥

हर रात की अँधेरी
उसको निराश करती ।
हर दीप की शिखा नित
काजल उसे बनाती ॥

हर चाँद की किरण हर
रोम-छिद्र में जा ।
विष-वाण बींधते थे
वह तिलमिला रही थी ॥

ऐ पापी प्राण तूने
कैसे विछोह पाया ।
क्यों साथ न गया तू
आँसू बहा रहा था ॥

हर दिन सुबह उदित रवि
था रक्त पान करता ।
उसकी विकल जवानी
वह भस्म कर रहा था ॥

ऐ दीनपाल देखो
खिलकर भी रो रहे हैं।
मुरझा रहे हैं कैसे
वह फूल कह रहा था ॥

१६ मई १९६४
कलजीखाल, पोड़ी-गढ़वाल में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीरों का हुंकार

हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है ।।

माँ के मस्तक का गौरव यह
खड़ा है निर्भय होकर,
हम सबकी रखवाली करता
सतत प्रहरी बन कर ।
उनने जाना भारत को क्या, कोई एक खिलौना है ।।
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है ।।

भरा हुआ है यह खनिजों से
लोहा सोना चाँदी,
इसकी मिट्टी में जन्मे हैं
राम-कृष्ण और गांधी ।
तेरी ही रज में माँ हमको, वीर दशा को पाना है ।।
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है ।।

घुसने देंगे नहीं शत्रु को
जब तक पौरुष माँ का है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत माँ का दूध पिया है
यहाँ हर बच्चा बाँका है।
लोकतन्त्र का मंत्र मुख्य ही, जिस जनता ने माना है।।
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है।।

जिसकी नारी शक्तिमती हों
दुर्गा - सी, सीता - सी,
उस माता को बना सकता है
क्या कोई भी दासी।
जिसकी द्रौपदी दमयन्ती ने, वन - वृक्षों को छाना है।।
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है।।

जिसके बालक बलि-वेदी पर
चढ़ें वीरगति को पाएँ,
जिसकी बहुएँ जौहर करके
स्वयं चिता चढ़ जाएँ।
जिसकी सावित्री से यम ने, हार पराभव माना है।।
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है।।

जिसका गान्धी उन गोरों की
तोपों से टकराया,
जिसके नेहरू के मरने पर
जग ने नीर बहाया।
विश्व - शान्ति है धर्म हमारा, यह सबने पहिचाना है।।
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह निसर्ग का लीलास्थल
तीर्थों की भरमार यहाँ,
मथुरा - काशी और रामेश्वर
बदरी है केदार जहाँ।
गङ्गा - यमुना को जीवन की धार सभी ने माना है॥
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है॥

माँ हमसे अब हाँ कह दे तो
नानी याद कराएँ,
अपना पौरुष दिखा शत्रु को
विष के दाँत गिराएँ।
इनको नाच नचाकर हमको, कालिया आज बनाना है॥
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है॥

भारत के वीरो तुम आओ
जागो वैरी आया है,
माँ के मस्तक पर क्यों चमकी
इसकी काली छाया है।
इसका चपटा - सा मुँह सीधा, करके आज बताना है॥
हमें न रोको माँ, वैरी को अब मार भगाना है।
या इस हिमगिरि की रक्षा में, हमको मर मिट जाना है॥

२२ दिसम्बर १९६२
भीमली तल्ली, अपने गांव,
पौड़ी-गढ़वाल में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मज़दूर

मेरे देश का मज़दूर
दो - चार रुपय्या पाता है ।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है ।।

तन पर बाँधे एक ढकौनी
आधा तन है खुला कहीं,
उसकी मेहनत के बल - बूते
हरी - भरी हैं आज मही ।
एक वक्त ही खाकर के बस
दिन उसका कट जाता है ।।
मेरे देश का मज़दूर
दो - चार रुपय्या पाता है ।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है ।।

रहने को है छान फूस की
धूप से दिन - भर तपी हुई,
साधनहीन जगह पर होगी
धुएँ की तह जमी हुई ।
उठ कर प्रातः गैंती को ले
मेहनत पर जुट जाता है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है॥

तन पर कपड़े नहीं बच्चों के
नाक की धारा है बहती,
प्रसन्न मुद्रा फिर भी उसकी
स्वाभिमान से है रहती।
उसका बच्चा धूल-रेत क्या!
पत्थर पर सो जाता है॥
मेरे देश का मजदूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है॥

बच्चों को भर पेट न भोजन
दूध-फलों का क्या कहना,
कई जनों को कमरे में जब
जबरन पड़ता है रहना।
गैस घुटन से दम उनका तब
घुट-घुट कर थक जाता है॥
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है॥

पढ़ना-लिखना अर्थ-व्यवस्था
गड़बड़ सारी रहती है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन करके मज़बूरी जिसकी
चुपके से सह लेती है।
शिक्षा की तो बात न पूछो
स्वास्थ्य तलक गिर जाता है॥
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है॥

तेरे बल पर गौरव रखती
मेरी पावन धरती है,
तुझको गर्मी हो या वर्षा
एक बराबर लगती है।
सच्ची कमठता के कारण
क्या उसको मिल पाता है॥
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है॥

मेहनत करता दिन-भर अपनी
निष्ठा से है लगा हुआ,
भरी दुपहरी टूटी तुझ पर
फिर भी चेहरा खिला हुआ।
उसकी मेहनत के आगे तो
सबका सिर झुक जाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है।।

ऋण में पैदा ऋण में रहता
ऋण है उसका सहगामी,
कठिन तपस्या कर मेहनत से
होती है क्यों बरबादी।
साम्यवाद के इंतजार में
जीवन ही कट जाता है।।
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है।।

कभी उठा जो स्वर तेरा तो
कुछ ने छुट-पुट मनन किया,
समिति बनाकर उस पर पूरा
आयोग बनाकर बिठा दिया।
उसकी आशा में वार्ता का
आश्वासन मिल जाता है।।
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाँच बढ़ेगी मज़दूरी तो
सौ सिर में चढ़ जाता है,
लाला जी का खाता भी तब
लालच में पड़ जाता है।
अन्तिम वर्ष का रोकड़-बाकी
ब्यांज सहित बढ़ जाता है॥
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है॥

घर पर लाला पहुँचे आकर
धर दो पैसा आज अभी,
पैसे के डर तुम भइया जी
सौदा लेते कभी-कभी।
जिसकी घटना प्रेमचन्द का
उपन्यास तक बन जाता है॥
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है॥

वायदा करता हर महीने
बेवकूफ़ मुझे बनाता है,
चार रुपये मिलते हैं तू
आठ हज़म कर जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो बच्चों के बदले देखो
दस पैदा कर जाता है।।
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है।।

जन-गणना में दर्जन पूरा
एक रजिस्टर भरता है,
सोम-शनिश्चर नाम गिनाकर
उधर जून तक बढ़ता है।
पूरे नाम गिना कर फिर भी
सावन का रह जाता है।।
मेरे देश का मज़दूर
दो-चार रुपय्या पाता है।
देख दशा पर उसकी ऐसी
मुझे तरस भी आता है।।

१८ मई १९८१
जूनियर हाई स्कूल जोशियाड़ा,
उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यथित शिक्षक

देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

करुणा की कुछ अविरल गति
थी मन में मेरे वनी खड़ी,
कह न सका जिसको मैं अब तक
कुछ शैशव की बात सही ।
दबी शृङ्खला भावों की वह
कभी पथिक बन जाती है ।।
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

आज व्यस्क हूँ और स्वतन्त्र मैं
बचपन की अब बात गई,
चार-दशक का अनुभव बनकर
फूट पड़ा है भावमयी ।
उलझन आकर जीवन में बस
सच्चा मार्ग दिखाती है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

तेरे नर छल दम्भी कुछ हैं
और कुटिलता से भरपूर,
कुछ पाखण्डी बनावटी तो
कुछ वेचारे हैं मजबूर ।
इन सब को एकत्र करो तो
राजनीति बन जाती है ।।
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

कुछ नर अपने स्वार्थों के बस
तुमको धोखा देते हैं,
कुछ उत्पीड़न होने पर भी
पीड़ा को सह लेते हैं ।
ईर्ष्या के इस पागलपन में
आग कहीं लग जाती है ।।
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ण - भेद ये राग - द्वेष से
अन्धा होकर चलता है,
धनिक - श्रमिक में अन्तर इतना
क्यों पैदा तू करता है।
साम्यवाद की नीति यहाँ पर
आकर के शरमाती है॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है॥

शिक्षा का ढङ्ग आज अधूरा
दोष दीखते आज कई,
ध्यान धरे जो कोई इस पर
नीति बनावे एक नई।
शिक्षा से तो जाति - भेद की
खाई भी पट जाती है॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है॥

शिक्षा से भी अधिक महत्तर
शिक्षक मेरा आज यहाँ,
रहने को आवास नहीं तब !
फिरता है वह कहाँ - कहाँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ - व्यवस्था गड़बड़ होकर
करुणा का स्वर गाती है ।।
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

आज विदेशों में शिक्षक को
आदर कितना देते हैं,
सबसे उत्तम बँगलों में
सब शिक्षक ही तो रहते हैं ।
व्यापक बुद्धि उसी शिक्षक की
तब निष्ठा बन जाती है ।।
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

सबसे अधिक अर्थहीन है
शिक्षक भारत का मेरा,
पेट न पलने के कारण जो
ट्यूशन करता बहुतेरा ।
जूता एक फटा है उसका
पैंट नहीं बन पाती है ।।
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोच - सोच कर अपने में ही
जीवन नीरस बनता है,
इन ठोकर की बातों को वह
खूब सँजोकर रखता है।
टीचर की हालत पर सोचो!
सदा फटीचर रहती है॥
देश करूँ क्या? सोचूँ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है॥

शिक्षक ही तो आज बनाता
डॉक्टर, इन्जीनियर को,
वही सिखाता है विद्या भी
आइ०ए०एस० और मेयर को।
बोनस, भत्तों की स्कीमें
शिक्षक से शरमाती हैं॥
देश करूँ क्या? सोचूँ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है॥

ओवर कामों में ऐ टीचर
तेरा नम्बर आता है,
लाभान्वित होने के अवसर
और ही कोई पाता है।
अन्य लाभ की उनको कोई
गन्ध नहीं मिल पाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ॥

जब तक शिक्षक भूखा रहकर
धन के पीछे भागेगा,
तब तक मेरे देश का यारो
भाग्य कभी क्या जागेगा ।
भोजन कपड़ा आवासी पर
बुद्धि वहीं टिक जाती है ॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ॥

बदली होती जब शिक्षक की
यात्रा - भत्ता कोई नहीं,
शिक्षा का अधिकारी कहता
ग्रांट तुम्हारी है ही नहीं ।
शिक्षक पर क्यों नीति तुम्हारी
सौतेली बन जाती है ॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी०पी०एफ० का लेखा - जोखा
जोखिम आज उठाता है,
मेरे वेतन का पैसा ही
मुझको खूब रुलाता है।
उठा चुका हूँ लेखनी अपनी
जो कविता में रङ्ग लाती है॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है॥

भावी जीवन की निधि को हम
मेहनत कर कटवाते हैं,
अपने बच्चों का मुश्किल से
पेट कहीं भर पाते हैं।
फिर भी उसमें रकम हमारी
कभी नहीं मिल पाती है॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है॥

ए० जी० को हैं मैंने भेजे
अब तक विनती पत्र कई,
किन्तु मिला ना उत्तर उनका
ज्ञात हुआ है राग नहीं।
मुख्यालय आओ तुम भइया
नीति यही बतलाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ॥

पेंशन पर जाकर यह शिक्षक
जी०पी०एफ० को ताक रहा,
आँखों में बादल हैं छाए
अस्थि-पंजर है काँप रहा ।
ऐसी दीन दशा पर मेरी
आँख स्वतः भर आती है ॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ॥

और सभी को सब कुछ मिलता
शिक्षक ने क्या खोया है,
इस शिक्षक ने दुःख में रहकर
तुमको आज सँजोया है ।
उपकारी का बुरा करो क्या !
नीति यही बतलाती है ॥
देश करूँ क्या ? सोचूँ ! तुझ पर
आज दया क्यों आती है ।
दया करुणा में परिवर्तित हो
स्वतः व्यथा बन जाती है ॥

४ मई १९८१
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंकर्त्तव्यविमूढ़

त्रिवेणी के तट पर हूँ मैं
मौन खड़ा पतवार नहीं ।
बिन तरणी के पन्थ अनोखा
शून्य विकल्पित बुद्धि बनी ।।

निशस्त्र निहत्था बुद्धि नहीं
है कोई भी तो साथ नहीं ।
शेष बचा हूँ एक अकेला
गये सगे सब छूट कहीं ।।

क्या छोड़ा है ! क्या लाया हूँ
किस-किस से क्या बात कही ।
क्या यह सृष्टि स्वप्न है मिथ्या
जीवन है बस यही सही ।।

पहले ज्ञान जो होता ऐसा
तो मैं तजता सत्य नहीं ।
एक सहारा है शिव तेरा
रोता हूँ अब नीर नहीं ।।

चार दिनन को आया था
तीन दिवस यों बीत गये ।
अज्ञान अँधेरे में रह करके
पूरे दिन यों खींच लिये ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिवजी हैं आराध्य हमारे
उद्धार वही अब कर देंगे
आज मनौती कर लूँ तो
दारिद्र्य सभी दुःख हर लेंगे ।।

क्लान्त कलेवर शान्त बना है
जर्जर बन कर पतझड़-सा ।
पड़ी बिवाई कर्मठ तन पर
दृष्टिहीन बेमतलब का ।।

पन्थ विकट है बीहड़ वन से
जाना है मजबूर कहीं ।
आने की तिथि ज्ञात हुई है
जाने की है ज्ञात नहीं ।।

शक्तिहीन तन रक्तरहित है
अस्थि सभी रसहीन बनी ।
कंठ सिसकता स्वर अंधा है
करुणा केवल भावमयी ।।

२२ माच १९८१
भागीरथी-तट, उत्तरकाशी में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृक्ष

शान्त बन में मुसकराती
टहनियों की फूल पाती ।
जब कभी हैं चोट खाती
आत्मा कुछ दहल जाती ।।

प्राण की वह वेदना तब
आँसुओं की धार लाती ।
वृक्ष तेरी अश्रुधारा
कौन पीड़ा चुपचुपाती ।।

वेदना की करुण कहानी
छटपटाती सहम जाती ।
जब कुल्हाड़ी काल बनकर
है तुम्हारी ओर आती ।।

बिन दया के ढाल देता
क्रूर मानव वृक्ष - पाती ।
जुल्म ढाती आदतों को
नियति भी नहीं रोक पाती ।।

रौंदता बेरहम बन कर
शाख हैं सब तिलमिलाती ।
सोच ! मानव किस तरह है
प्राणियों की जान जाती ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपकार का ये व्रत लेकर
जान तक तुमने लगा दी।
जबकि मानव ने तुम्हारे
प्राण की होली जला दी।।

स्वच्छ रखता जो पवन को
छाँव करती पेड़ पाती।
वृक्ष की वह छाल तक भी
मानवों के काम आती।।

खटिक तेरा नाम मानव
या कहूँ तुझको चिराँती।
चीर कर तू टूक करता
है बनाता एक थाती।।

वृक्ष देखो कट रहा है
चिर रहा है रोज राती।
है समापन की दिशा पर
जंगलों की वृक्ष जाती।।

श्रेष्ठ पादप डाल तेरी
उपकार करना है सिखाती।
एक मानव भावना है
स्वार्थों की ओर जाती।।

टहनियों की पालकी जब
घाट पथ की ओर जाती।
चढ़ चिता में आग पाकर
राख सबको है बनाती।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिट न सकती है धरा की
जल रही जो दीप-बाती।
क्यों अहिंसा की विवशता
मौन होकर गीत गाती।।

स्वतन्त्रता-दिवस की पूर्व-सन्ध्या,
१४ अगस्त १९८४
ट्रांज़िट होस्टल, लदाड़ी,
उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञानसू - भूस्खलन[1]

घनघोर घटा के बादल थे
तम - तोम भयङ्कर छाया था ।
थी रात अनोखी गरज रही
वह काल प्रलय का आया था ।।

उस वर्षा में चमका नभ - घन
फट पड़ा जोर से खाले में ।
शत वज्रपात - से हुए और
सागर था उमड़ा नाले में ।।

बह चली आग की ज्वाजा - सी
धू - धू करती सिसकार भरी ।
लुढ़क पड़े गुरु शिलाखण्ड
फिर कीचड़ मिट्टी की धार वही ।।

भड़-भड़ खड़-खड़ लावा पत्थर
का भारी भरकम नाद बना ।
ज्वाला बन कर सन-सन करता
मिट्टी - पत्थर सब गाद बना ।।

---

[1]२४ जून १९८० को उत्तरकाशी के समीपवर्ती स्थान ज्ञानसू में भूस्खलन से सैकड़ों व्यक्तियों की जानें गईं । कुछ परिवारों का तो नामलेवा तक न रहा । यह दर्दनाक भय-त्रास-जनक भीषण दृश्य प्रस्तुत है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोल्डर क्या थे पर्वत जैसे
ढह गए गगनचुम्बी विशाल ।
भण्डार - भवन वन-तरु समूह
जिनके थे उन्नत उच्च भाल ।।

ऊपर से छत की टिन चादर
भौचक्की - सी रह गई पड़ी ।
आवासों के छत के ऊपर
थी बाढ़ भयङ्कर फैल गई ।।

मैं भी आया था पिक्चर से
जैसे ही नाला पार किया ।
मिट्टी पत्थर बहता पानी
मुझको छूता निकल गया ।।

हिल उठे भवन थर-थर-थर-थर
सब लोग घरों से निकल पड़े ।
कोई नीचे कोई ऊपर
कोई आपस में टकर गए ।।

कोई भागा निज गाय पकड़ कर
बछड़ा उसका था छूट गया ।
कोई तो नेकर में भागा
कोई नङ्गा ही फूट लिया ।।

कोई बच्चा गोदी में था
कन्धे पर कोई लटक रहा ।
कोई पथ पर पहुँच गया तो
कोई खेतों में भटक रहा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था एक मवासा[1] राजों का
कुल चौदह प्राणी उसमें थे।
कुछ बातों में लगे रहे तो
कुछ बेचारे सोए थे॥

उठने को तैयार हुए जब तक
बाढ़ ने घेरा मार दिया।
दबे गाद में चले साथ में
काल-निशा ने हार किया॥

बच्चे को लेकर गोदी में
थी एक बहू जो खड़ी रही।
आकंठ फँसी थी दलदल में
किन्तु ध्यान में लीन रही॥

बच्चे को ऊपर थी करती
ज्यों-ज्यों मलवा चढ़ता था।
थमा-रुका गले तक आकर
फिर गाद बना सब ढलता था॥

ऊपर होटल कई दुकानें
वह गया जिसको बहना था।
क्षण-भर में ही वारा-न्यारा
रह गया जिसको रहना था॥

सड़क से नीचे थे नेपाली
उनका तो कल्याण हुआ।

---

[1]परिवार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो न कभी नहाया था गङ्गा
वह आज नदी में कूद पड़ा ।।

मृत ठेकेदार पड़ा सचमुच
हाथों में अपना बैग लिए ।
झाड़ी में छिपकर था बैठा
जैसे थे कितने पाप किए ।।

होटल वाले के खच्चर थे
उस सड़क किनारे बँधे हुए ।
कुछ भागे उस भगदड़ में ही
कुछ तो रह गए फँसे हुए ।।

जो पापी खच्चर थे भागे
सच्चे थमकर भी जमे रहे ।
आज उद्धारो माँ हमको तुम
बोझा ढोते ही हार गए ।।

इस मालिक ने जीवन सारा
बुरी तरह दबोच लिया ।
किस ओर और कैसे भागें
है पीठ तलक को नोच दिया ।।

बाढ़ के द्वारा हुए शरणागत
तब गङ्गाजल का पान किया ।
उनकी पीड़ा को सत्वर हर
ऐ भगवन् तुमने कल्याण किया ।।

गङ्गा से खाले तक कोई
दो सौ मीटर की है दूरी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उद्धार उन्हीं का आज हुआ है
जिनकी यात्रा हो ली पूरी ।।

अर्द्धरात्रि में फैल गया जब
सब लावा मिट्टी गारा था ।
तब घटना-स्थल पर आ पहुँचा
डी०एम० डबराल बेचारा था ।।

दबी बहू थी बच्चा समेत
उसको देखा हैरान हुए ।
जैसे - तैसे बाहर खींचा
तब सब ईश्वर को मान गए ।

भोर हुई जब उमड़ी जनता
लाखों दर्शक थे ज्ञानसू में ।
भय-त्रास-जनक था दृश्य बड़ा
सामने खड़ा तब ज्ञानसू में ।।

किसी का जबड़ा साफ हुआ था
सिर के टुकड़े - टुकड़े थे ।
हाथ सफा थे पैर किसी के
पिचके - पिचके मुखड़े थे ।।

आवासों की थी होड़ लगी
निर्माणाधीन थे कहीं - कहीं ।
वे धनी अकड़ते थे तब भी
दो सौ पर भी था कहीं नहीं ।।

उन धनपतियों ने जबरन ही जब
भवन बनाये खाले में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डेढ़ सौ रुपय्या एक कक्ष का
थे मच्छर भी परनाले में॥

पढ़ने बैठो जमकर जब भी
कर देते बिजली बन्द तभी।
नहाने बैठो नल के नीचे
पानी करते बन्द कभी॥

मकानों के वे मालिक अब
मुँह पर से मक्खी भगा रहे।
दो-सौ के कमरे के अब वे
बस बीस-तीस ही लगा रहे॥

मिला न उनको कोई भी अब
कौन भाग्य का मारा था।
मकान वालो अब भी सँभलो
हम सबका यह नारा था॥

छः महीने वर्षा के भय से
खाली सारे भवन रहे।
दो-सौ के आधे पर सौ में
वे आज तलक भी नहीं गये॥

प्रकृति परखती है सबको बस
थोड़ा नाच नचाती है।
सीमा से बाहर जो जाता
उसको सबक़ सिखाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तरकाशी में जाने क्यों
प्रकृति कैसे रूठ गई।
शङ्कर की नगरी में देखो
पापों की हँडिया फूट रही।।

पहले झटके में बाढ़ चढ़ी
उत्तरकाशी सारी काँप गई।
इस झटके में ईश्वर को अब
सारी जनता मान गई।।

यह ख़बर भयङ्कर पहुँच गई
भारत के कोने-कोने में।
जैसे जिसको पता लगा तब
लग गए रोने-धोने में।।

बेचारे नेपाली थे जो
पता नहीं सब कितने थे।
था नाम-गाँव का पता नहीं
वे कैसे किसने लिखने थे।।

उनके बच्चे घर पर होंगे
सोचेंगे अब घर आवेंगे।
अब कई महीने बीत चुके
तब थोड़ा-सा घबराएँगे।।

माता कहती होगी ऐसे
हा मेरा बेटा कहाँ गया।
घरवाली तब कहती होगी
कुछ बीमारी ने घेर लिया।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूल गए क्या बाबा हमको
कहते होंगे वे बच्चे भी ।
करते होंगे ईश्वर से वे
विनती उनके अच्छे की ।।

लाए सीटी याद दिलाती
मेरे बाबा अपने की ।
लेटे सरिता के मध्य कहीं
कहानी है क्यों सपने की ।।

माँ कहती है बाबा तेरे
बस आने ही वाले हैं ।
देखा उनको स्वप्न में मैंने
वे बैठे भोलेभाले हैं ।।

उठती लपटें उजड़ा पर्वत
कुछ भगदड़ - सी है मची कहीं ।
मेरी चूड़ियाँ फूट गईं पर
भागी मैं तब दबी नहीं ।।

बाबा उनके स्वर्ग सिधारे
वे वापस कभी न लौटेंगे ।
अपने बच्चों - माँ - बीबी को
देख नहीं अब पाएँगे ।।

नहीं सुनेंगे घर वाले भी
यह भेद रहेगा छिपा हुआ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल कविता होगी ऐसी
जिसमें होगा सब लिखा हुआ।।

रहस्य बना ज्ञानसू अद्‌भुत
प्रकृति में क्या छिपा हुआ।
करुणा की ये दुर्घटनाएँ
विधि ने क्या-क्या लिखा हुआ।।

२६ जून १९८०
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेरोज़गार युवा

पढ़ा - लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा ।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा ।।

पढ़ा-लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा ।

लोग गए सब दफ्तर दिन में
यह चलता पिक्चर की धुन में,
इस वैज्ञानिक युग में दुनिया
उसको दिखती टुनटुन में ।
मीना, रेखा की फिल्मों में
मिलता उसको एक सहारा ।।

पढ़ा - लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा ।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा ।।

कल्पना जाने क्या-क्या मन में
डिग्री लेकर बैठा घर में,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्सुकता से काटे चक्कर
रोज़गार के दफ्तर में ।
बिना चढ़ाए भइया मेरे
है न कोई कुछ चारा ।।

पढ़ा - लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है वेचारा ।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा ।।

रोज़ निकलतीं अख़बारों में
पोस्टें बिकतीं बाज़ारों में,
वन्द लिफ़ाफ़ा करके देना
विज्ञापन-संख्या लिख देना ।
लम्बा-चौड़ा बड़ा लिफ़ाफ़ा
नाम-पता हो शुल्क हमारा ।।

पढ़ा - लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है वेचारा ।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा ।।

गुज़रे महीने वर्षों बीते
मिला न मौक़ा जीते - जीते,
कुछ थे भाई और भतीजे
कुछ को लेंगे इसके पीछे ।
जाने कितना प्रतिशत बनकर
होता है इनका बंटवारा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढ़ा - लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा।।

गया जहाँ भी मिली निराशा
इधर रही ना कुछ भी आशा,
उधर पिता ने उसे पढ़ाया
रहकर अपना भूखा-प्यासा।
तब बहती है नई क्रान्ति की
जलती ज्वाला की धारा।।

पढ़ा - लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा।।

उन्नीस सौ सत्तर सावन में
एम०कॉम० किया था सुरजू ने,
चौथे में थी मुन्नी तब के
सेवन्थ किया था बृजू ने।
मुन्नी सौहर चली गई अब
पिता रिटायर हुआ बेचारा।।

पढ़ा - लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरजू हारा बृजू हारा
मुन्नी हार के चली गयी,
माँ वेचारी अन्धी होकर
फिरती जाने कौन गली।
जी०पी०एफ० नहीं मिला पिता को
चौपट है अब घर सारा॥

पढ़ा-लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा॥

अब तक काटे दिन खिचड़ी पर
नून चवेना चने चबाकर,
सोच रहा था नौकरी पाकर
तभी बसाऊँगा अपना घर।
किन्तु! समय से पूछ रहा हूँ,
मैंने तेरा क्या बिगारा?

पढ़ा-लिखा यह युवा हमारा
खाली बैठा है बेचारा।
रात में गिनता नभ के तारे
दिन में फिरता है आवारा॥

शनिवार, २० सितम्बर १९८४
आराकोट बंगाण में।
उत्तरकाशी जनपद में,
हिमाचल की सीमा पर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धीरा[1] का धर्म

क्या अपनी इस प्राणप्रिया को
आज अकेला छोड़ दिया ।
जीवन - पादप को मेरे क्यों
पानी देना भुला दिया ।।

दुश्मन की क्या गोली लग कर
जख्मी हो कर कराह रहे हो ।
कहीं गुफा - कन्दराओं में पड़
आँसू टप - टप बहा रहे हो ।
नैन बने हैं बादल कैसे, सावन-भादों बहा दिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
जीवन-पादप को मेरे क्यों, पानी देना भुला दिया ।।

शीत पवन की लहरें उठ कर
हाड़ कँपाती होंगी थर - थर ।
तुम भू - धर से बचना हट कर
धैर्य - धर्म दोनों ही मिल कर ।
मदद करेंगे हम दोनों की, राम-लखन जी और सिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
जीवन-पादप को मेरे क्यों, पानी देना भुला दिया ।।

---

[1]एक सैनिक-पत्नी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना तुम्हारे जीएं तो अब
बाहर पग रखने में भी डर ।
दुनिया हमको दुतकारे सब
मत दिखला मुख कहता हर स्वर ।
खिले सुमन को सरसी के तट, कैसे तुमने तोड़ दिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
जीवन-पादप को मेरे क्यों, पानी देना भुला दिया ।।

विधवा जाने मुझको सब जग
हँसी उड़ाएँ हर-जन हरदम ।
पवन उड़ाता केशों की लट
बिन धोए जो लगते अटपट ।
क्या मेरे इन उपवासों के, सत को कोई डिगा रहा ।
आज अकेला छोड़ दिया,
जीवन-पादप को मेरे क्यों, पानी देना भुला दिया ।।

बिना पति के इन प्राणों का
जन्म अकारथ अबलाओं का ।
लोकवाद कुछ अफवाहों का
पग-पग भेंटा दुख दाहों का ।
तड़प-तड़प कर जीना यह तो, चातक का सा हो गया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
जीवन-पादप को मेरे क्यों, पानी देना भुला दिया ।।

एक महीने तक व्रत रख कर
या सपनों में कह दो आकर ।
अन्तिम दिन को चिता बनाकर
व्रत तोड़ूंगी तुमको पाकर ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या भेटूंगी देवलोक में, पक्का निश्चय बना लिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
क्या अपनी इस प्राणप्रिया को, आज अकेला छोड़ दिया ।।

आज चिता इन उपवासों की
अन्तिम तिथि है इन श्वासों की ।
तब तक वायस काँ-काँ करता
पाहुन की अगवानी भरता ।
क्या मैंने इस धर्म की डाली को यूँ ही है सुखा लिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
जीवन-पादप को मेरे क्यों, पानी देना भुला दिया ।।

यदि होगी जो धर्म की डाली
हरी रहेगी वा बिन माली ।
धर्म की पक्की होती नारी
जिस पर दुनिया टिकती सारी ।
सीता ने तो धर्म की खातिर, आग को चन्दन बना दिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
जीवन-पादप को मेरे क्यों, पानी देना भुला दिया ।।

अब छिपने ही वाला दिनकर
चिता जलेगी धू-धू कर-कर ।
सूर्यास्त से पहले आकर
प्राणेश्वर भी पहुँचा थक कर ।
चिता बुझी जब दिनमणि ने ही, बन्धन उनका जोड़ दिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
क्या अपनी इस प्राणप्रिया को, आज अकेला छोड़ दिया ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्य धर्म की नौका की जय
अथाह उदधि में चलती निर्भय ।
एक धर्म की खातिर मिल गये
दोनों की जोड़ी की जय - जय ।
नारी के दृढ़ धर्म को देखो, जिसने पति को बचा लिया ।।
आज अकेला छोड़ दिया,
क्या अपनी इस प्राणप्रिया को, आज अकेला छोड़ दिया ।।

८ मार्च १६६६
इण्टर कालेज लैन्सडौन,
पौड़ी-गढ़वाल में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शहीद 'सुमन'
(श्रीदेव सुमन के प्रति)

सुमन हम गर्वित रहेंगे
सदा इस उपकार से।
तीन महीने भूख से तुम
वन गये अङ्गार थे॥

वीर गढ़वाली तुम्हारी
कीर्ति हिमगिरि गा रहा।
हम जुहारेंगे सदा
तू दर्द पीता ही रहा॥

आज भी आवाज देता
भिलङ्गना का लाल पानी।
आज फिर अकुला रही है
दीन की अवरुद्ध वाणी॥

स्वर्ण के अक्षर तुम्हारे
लिख चुके बलिदान को।
क्योंकि तुमने देश के हित
तुच्छ समझा प्राण को॥

२ अगस्त १९६६
भिलङ्गना नदी का तट, टिहरी में
भ्रमण के दौरान।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूल

बहारों ने छोड़ी थी
जीवन में एक फुहार !
भयानक आँधी में
भयभीत होकर,
दौड़ गया मन
तमसा के तट पर,
जहाँ बजरी-रेत
कङ्कड़-पत्थर
फैला ढेर !

उनका आवरण
सफेद,
अन्तः उर में भेद,
और कसैलापन
चारों ओर
कँटीले तारों की बाड़।
स्वाभाविक था उसमें अटकना !
फिर जीवन का मापदण्ड !
सिसकता रह गया ॥

१० अप्रैल १९८०
पूर्व माध्यमिक विद्यालय जोशियाड़ा,
उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय की छाप

आदमी को
तमाम आदमी कहते हैं !
कि जब वह आता है
खाली !
जाता है खाली !
किन्तु ऐसा नहीं !
हर आदमी
साथ-साथ
कुछ लाता है
कुछ ले जाता है
और कुछ दे जाता है
जिसका कि
भार नहीं होता !
वह भार-हीन वस्तु !
उसकी अपनी
और समय की
छाप होती है ।।

५ जून १९७८
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काम

मेरे देश !
पहिचान कर !
काम की
जो एक प्रेरणा
वास्तविक मापदण्ड अपना
और ज्ञान की एक पोथी
होता है ।

कलाकार, कवि
आम आदमी से अलग !
चितचोर की तरह
रचना के
गहरे महासागर में
डूब कर ऊब जाता है ।
फिर, कवि प्रतिभा
लुट जाने का खतरा
टल जाता है ।

अदूरदर्शिता से काम बिगड़ा
देश का वंटाधार
रगड़ा-झगड़ा
आन्दोलन-बलात्कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगजनी के बढ़ते चरण
कामिनी की हत्या
और यह दहेजीकरण
भौतिकवादी युग में
द्रौपदी चीर-हरण
क्योंकि
तमाम दामादों के
कंद का खतरा !
बिना गवाह
टल जाता है।

मेरा भारत !
काम के पीछे भागता है
जबकि !
विदेशों में
काम की तसल्ली
होती है।

यहाँ काम करने वालों को
काम से वञ्चित,
चाहने वालों को
दण्डित,
और काम से बचने वालों को
पण्डित कहा जाता है।

कवि अपनी कविता में
काम की झलक
अवश्य लाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि कवि इससे
अपने जीवन की मधुशाला
में पहुँच कर,
अनुभवों के गहरे सागर
के उस पार की
अनुभूति को
पाना चाहता है।

किन्तु कभी
बिना कामिनी के
मन-भावन-सावन
के इर्दगिर्द
जाने क्या-क्या
लिख जाता है॥

८ फरवरी १९८०
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उखड़ती साँस

ऐ बूढ़ी साँस !
तुम बहना बन्द करो
क्योंकि तुम्हारा
अन्त
अन्तिम दौर में है
जिसका
लौटना मुश्किल !
तरुणाई पाना
कठिन है ।

ऐ बूढ़ी साँस !
यदि तुम अब भी
ज़िन्दा रहने के लिए
मजबूर हो
तो तुम्हारी
यह घुटन ?

तुम्हारा हर तार
बरबाद होकर
भिद चुक-चुका है
और तुम्हारी
सञ्चार-व्यवस्था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्त-व्यस्त होकर
वीरानी के कगार पर
खड़ी है !

जो भयङ्कर
घोटाले में पड़ी है।
शायद वह
महसूस
कर रही है
इसकी गिरती हुई
दशा को !

तुम असहाय होकर
जूझ रहे हो
सहायता के लिए।
लेकिन
ज़िन्दगी के
दीर्घ आघातों से
दब-दब कर
अब
उभर पाना ! दूभर,
और कठिन है।

१४ जनवरी १९८१
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थान्ना

थाना वह नहीं ! जहाँ
किसी को पकड़ कर
वन्द किया जाता है।

थाना वह नहीं ! जहाँ
'था' और 'ना' का
असली अर्थ
लिया जाता है।

थाना वह है ! जहाँ
मुलज़िम को
साधने में अक्षर 'उलटा'
और नकेल डाल कर नाथा जाता है।

२६ सितम्बर १६७७
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उद्विग्नता

उद्विग्न मन
जाने क्यों,
ऊब रहा है।
उठता है
मन में द्वन्द्व
तू है स्वच्छन्द

लिख दे !
उद्विग्ना के
मैले—भेदभावपूर्ण
यह नतीजे !
कुटिलता को जो
पी रहा है

और उन दर्दीले
भावों का
आम रास्ता
बन्द है !
कर दे इसका
अन्त।

२५ अक्टूबर १९८२
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टिभेद

ऐ भ्रमर !
उन प्रसूनों पर
किसी और की भी
निगाह है ।

अरे !
यह तो चतुराई है
अभिनय की
भला ! यह बात
है कोई बताने की

अरे निगाह टिकाने वालो !
तुम्हें क्या पता कि
निगाह टिकने का
क्या अर्थ होता है ?

इसके अनुभवों के अर्थ का
अहसास तो
उसको होता है !
जिसकी समस्त
मजबूरियाँ
मूक होती हैं ।

१३ अप्रैल १९८१
गोपेश्वर, चमोली गढ़वाल में
भ्रमण के दौरान ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदत का साथ

जिससे तुम पीते हो
कश लगा कर
कहीं खो जाते हो
यह धुवाँ बादल-सा
गैस की तरह
समा गया
दिल, फेफड़े और दिमाग़ में ।

जम गई छाप रग-रग में
बन गई एक नई वस्तु !
जो तुम्हें जर्जर बना देगी ।

तब एक शौक था
अब एक बोझ है !
तुम्हारी रूह के साथ
चलती रहेगी सतत
और रूह एक दूसरे
ढाँचे की बनी होगी
तुम पर एक विशेष
प्लेट लगी होगी ।

अब वहाँ,
तुम्हारी आत्मा तड़पेगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिगरेट के लिए
तुमने एक आदत बनाई
अब वह अजर-अमर बन गई
भले ही तुम्हारी आत्मा ने
उस काया को छोड़ दिया है।

किन्तु आदत ने
अपने को संस्कार से
जोड़ दिया है
जो आत्मा के साथ
भयङ्कर बोझ है।

१७ फरवरी १९७८
जोशियाड़ा, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नकली डिगरी

मित्र मेरे बतलाओ ?
अब तक
पत्र क्यों नहीं भेजा ?
या कोई उलझन आकर
बनी, विषम की रेखा !
पिछला पत्र, पढ़ा,
देखा !
पढ़ी कुशलता
शुभ सन्देशा !
सदा रहो खुश
बधाई का ऐसा
मिला होगा पत्र तुम्हें
कुछ दिन पहले मेरा।

पत्र में तुमने क्यों
भावों को बना के लगाया ?
खेद है !
तुम्हारी डिगरी का पुट
इसमें नहीं आ पाया।
इस दु:ख से,
हृदय भर आया !
क्या तुमने ?
डिगरी को तो
नहीं चुराया ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारे पत्र में,
न कसक थी
न लालित्य
न शब्दों का वजन
न साहित्य !
वह पत्र था
हाई स्कूल के स्तर का।

प्रिय दोस्त !
बुद्धि और कलम
ख़ाक छान रही हैं
खरीदी डिगरियाँ
मौज उड़ा रही हैं

खरीदी हुई डिगरी को
क्या पता कि
संस्था भाड़ में
या कि गर्त में
जा रही है
या आगजनी-तालाबन्दी
आन्दोलन कर रही है।

खरीदी डिगरी का !
नकलीपन, विवेकशून्य !
और ईर्ष्यालु मन
अभिमान की भेद-नीति में
गाल फुलाए भद्दा लगता है
नकली थोपा हुआ चेहरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सही डिगरी का स्वाभाविक ज्ञान
शुद्ध विवेक और स्वाभिमान
आश्रय नहीं चाहता !
सङ्घर्ष झेलता है।
इस नकली दुनिया में
रह कर !

जानना चाहता हूँ !
ऐसी डिगरियाँ
कैसे मिलती हैं ?
यह समाज
इन डिगरियों को
कैसे स्वीकार
कर लेता है ?

यदि डिगरी
बिकती है तो !
मेरी कलम
लिखती है !
इस देश की साँझ
सिसकती है
रात चिढ़ती है
और
"नियति" का भाव
"इति" है ॥

१६ जून १६८०
ज्ञानसू, उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षणभंगुरता

एक गुलदस्ता !
फूलों से
सजा है
लदा है
उसूलों से
निर्भय
स्वच्छन्द
बँधा है वह
कला की निश्चित
सीमा में ।

एक—अनेक से
जुड़कर
पंचमेल खिचड़ी-सा
सुन्दर आकर्षक
सौन्दर्य के अभिमान में
वह मौन
खड़ा है ।

इसमें आकर्षण
हरियाली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौन स्वीकृति
सजीली
निराली काया
एक दिलचस्प !
नशीला उभार !

और
उफान
रंगीन आभा
सब को
नशे में
झुमा देने वाली
एक 'समा' !

किन्तु ग्रीष्म में
झुलसकर
तपन से मुरझाकर
इसकी साँझ
होने लगेगी !
और स्वतः ही
इस समा का
सँजोयापन !
सुन्दरता !
संयोग-वियोग का
क्षण
कल्पना के परे
हो जायेगा !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचारों का सम्बन्ध
समा का जीवन !
यह यौवन, सुन्दरता
समय की परिसीमा से
बँधा हुआ है।

८ नवम्बर १९८०
नेहरू माउण्टेनियरिंग संस्थान,
उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाग विश्व के युवा

जाग विश्व के युवा
छोड़ द्वेष, एकता की
बात का अलख जगा ।।
जाग विश्व के युवा ।।

हो भला हर एक का
बने अखण्ड एकता ।
एक धर्म विश्व का हो
मानवों की जाति का ।।
जाग विश्व के युवा ।।

सृष्टि में प्रभेद का
बनावटी इस भेष का ।
कर तू अन्त हो स्वच्छन्द
बीज बो दे प्यार का ।।
जाग विश्व के युवा ।।

परिस्थितियाँ हैं आज की
तू पीड़ हर समाज की ।
चल रहा तनाव जो
इसे मिटा के तू दिखा ।।
जाग विश्व के युवा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोत खेत श्रम कर
फल न देख कर्म कर।
संकटों से सीख बढ़ना
मंत्र है ये जीत का ॥
जाग विश्व के युवा ॥

जो कुरीति - रीतियाँ
कई बुरी हैं नीतियाँ।
चुन विकल्प आज एक
विश्व के विकास का ॥
जाग विश्व के युवा ॥

इस अकाल काल में
बुरे समय की चाल में।
शान्ति के सपूत आ तू
एकता के गीत गा ॥
जाग विश्व के युवा ॥

विज्ञान को मिले दिशा
विनाश का न हो नशा।
चन्द्र - इन्द्र लोक देख
पर न छोड़ तू धरा ॥
जाग विश्व के युवा ॥

इस धरा की नारि भी
कई अमर हैं आज भी।
नारि नर से आदि से ही
साहसी है छः गुना ॥
जाग विश्व के युवा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बस्ती - गाँव हो शहर
छा न जाय फिर कहर।
शान्ति और मिलन को आज
वक्त भी है चाह रहा ।।
जाग विश्व के युवा ।।

है तू किस फिराक में
शस्त्र रख दे ताक में।
प्रदूषण को रोक पहले
विश्व स्वर ये कह रहा ।।
जाग विश्व के युवा ।।

सदा रही ये वीर - भू
सत्य निष्ठा लेके तू।
चल सबेर कर न देर
कह रही है धरती माँ ।।
जाग विश्व के युवा
छोड़ द्वेष, एकता की
बात का अलख जगा ।।

१२ जनवरी १९८५
ट्रांजिट होस्टल, लदाड़ी,
उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिव्य शक्ति :

पूज्य स्वामी चिदानन्द जी

नत मस्तक हो नमन करूँ मैं
धन्य हिमालय की धरती ।
निर्मल गंगे नमन तुझे,
तू चिदानन्द की तपस्थली ।।

सब कुछ त्यागा जिसने अपना
जन मानस का है व्रती ।
२४ सितम्बर १९१६
में जन्मा है एक 'यती' ।।

मंगलौर की माटी तू पावन है
गौरव तुझ पर भारत को ।
जनम दिया है एक तपस्वी
'श्रीधर' जैसे बालक को ।।

यती संन्यासी जिसको बनना
रुकता कैसे वह भला !
मद्रास के लोयोला कालेज पढ़कर
उत्तराखण्ड की ओर चला ।।

शिवानन्द को गुरु बना कर
करी साधना तन-मन से ।
जन मानस की सेवा का जो
भाव जगा था बचपन से ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कष्ट निवारण करने सबका तुम
दिव्य ज्योति बन भू पर आए।
आध्यात्मिकता का अलख जगा कर
पूज्य 'चिदानन्द' कहलाए॥

शीश झुकाता गुरुवर मैं हूँ
श्री-चरणों में नत मस्तक।
ज्ञान-प्रभा की प्यास बुझा दो
दो कविता की एक ललक॥

२४ सितम्बर १९८५
ट्रांजिट होस्टल, लदाड़ी,
उत्तरकाशी में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जग्गू जी में मर्म को छूने वाली दृष्टि के साथ हृदय की गम्भीर वेदना भी है ।

—महादेवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri